VIDYA - A JOURNAL OF GUJARAT UNIVERSITY

Peer-Reviewed, Multidisciplinary & Multilingual Journal

ISSN: 2321-1520 **E-ISSN:** 2583-3537

भारत के प्राथमिक शिक्षण तन्त्र में संगीत : विशेषताएं एवं चुनौतियाँ

प्रज्ञा विवेक मिश्र, डॉ० श्वेतकेतु ए० वोरा

(एस० आर० ऍफ़०, हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत)

सम्पर्क : ईमेल – pragyavivekmishra@gmail.com, मोबाइल - +91-8601508686

संकायाध्यक्ष/निदेशिका : डॉ० विराज अमर भट्ट

उपासना मंच कला संकाय, गुजरात यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद

भारतीय सामाजिक तन्त्र के साथ विभिन्न प्रकार की कलाओं का एक अटूट एवं विशेष सम्बन्ध है| भारतीय समाज के जीवन के प्रत्येक भाग में ललित कलाओं अथवा अन्य किसी भी प्रकार की कला का समावेश अवश्य ही दिखाई देता है, चाहे वो किसी भी जाति के साथ सम्बन्ध की बात हो, धर्म हो, क्षेत्र – विशेष हो अथवा परिवेश हो; कला का कोई न कोई रूप भारतीय समाज के जीवन का अभिन्न अंग बनकर के अनादिकाल से संव्याप्त रहा है| भारतीय संस्कृति विश्व की एक ऐसी संस्कृति है, जिसमें हर प्रकार की वैश्विक धार्मिक परम्पराओं, शिक्षाओं, कला, दर्शन एवं परम्पराओं की किसी न किसी रूप में उपस्थिति अवश्य ही प्राप्त होती है| यहाँ पर आदिवासी संस्कृति भी है, तो अत्याधुनिक मेट्रोसिटी वाली संस्कृति भी है एवं इन दो ध्रुवों के बीच अनेक प्रकार की संस्कृतियाँ भी हैं| संगीत अथवा किसी भी अन्य प्रकार की कला, इन सभी संस्कृतियों की अन्यतम संगिनी है, यह एक सुनिश्चित तथ्य है|

भारतीय ज्ञान प्रणाली, जिसे नवीनतम **"नई शिक्षा नीति – २०२०"** में एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण विषय के रूप में पहचाना गया है, यह भारतीय समाज के लिए कोई नई बात नहीं है, वरन यह तो हमारी मौलिक शिक्षण – परम्परा ही है, जिसे भारतीय शिक्षण – तन्त्र के पाश्चात्यीकरण होने के बाद भुला दिया गया! वरना यह तो हमारे भारतीय समाज के यथार्थ शिक्षण – तन्त्र का ही स्वरूप है, जिसकी महत्ता को आज रेखांकित करने का प्रयास किया जा रहा है| यह विभिन्न प्रकार की कलाएं उस प्राचीन भारतीय विद्या प्रणाली के ही एक अभिन्न अंग थे, जिनको आज पुनर्जीवित करने का प्रयास किया जा रहा है| प्राचीन वैदिक वांग्मय को देखें, पौराणिक काल को देखें, महाकाव्य काल को देखें, ब्राह्मण काल को देखें, उपनिषद् काल को देखें, आरण्यक काल को देखें अथवा मौर्य, गुप्त एवं यहाँ तक कि मुग़ल काल को भी देखें, उस काल की शिक्षण प्रणाली का अवलोकन करें, तो सबमें एक तथ्य समान रूप से दिखाई देता है, और वह है शिक्षा के विद्या में रूपांतरण का, शिक्षा को दैनिक व्यवहार में लाने का, शिक्षा को केवल धनार्जन के उद्देश्य के लिए न रखकर वरन जीवन – दर्शन को समझने का, व्यावहारिक जीवन में आने वाली प्रत्येक परिस्थितियों को नियंत्रित करने की क्षमता को विकसित करने का! किन्तु कालान्तर में भारतीय विद्या प्रणाली के पाश्चात्यीकरण के द्वारा धनार्जन का उद्देश्य तो पूरा हुआ परन्तु विभिन्न प्रकार के अन्य उद्देश्यों के साथ समझौता कर लिया गया, या तो जान – बूझकर या अनजाने में! अब वह समय आ गया है जबकि भारतीय शिक्षण तन्त्र में आमूलचूल परिवर्तन लाया जाये, जिसके लिए हमें पुनः उसी प्राचीन भारतीय विद्या प्रणाली को आधुनिक जीवन की आवश्यकताओं के अनुरूप ढालकर उसको पुनर्जीवित करना पड़ेगा, उसके मूल्यों एवं आदर्शों को समझना पड़ेगा| वर्तमान एवं भविष्य में आने वाली सरकारों को, शिक्षाविदों, विद्यार्थियों, शिक्षण संस्थाओं, तथा शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाले अन्य सरकारी – ग़ैर सरकारी संस्थाओं, व्यक्तियों एवं तंत्रों को अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा के साथ लगना पड़ेगा, तब जाकर के भारतीय विद्या प्रणाली के उन तमाम परम् उद्देश्यों की प्राप्ति हो सकेगी|

भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात् के शिक्षा नीतियों में उस समय की आवश्यकताओं के अनुरूप अभियांत्रिकी, स्वास्थ्य, उद्योग तथा कृषि इत्यादि जीवन की मूलभूत सेवाएं ही उस समय की सरकारों के केंद्रबिंदु में रहीं| परन्तु उस समय के शिक्षाविदों एवं नीति – नियंताओं के द्वारा संगीत एवं अन्य कलाओं की किंचित् उपेक्षा ही हुई| यद्यपि यह एक परम् सत्य है कि मानव – जीवन के विकास के लिए जितना रोटी – कपड़ा – मकान एवं रोज़गार की आवश्यकता है, उससे किसी भी प्रकार से कम महत्त्व कलाओं का नहीं है| कलाओं के माध्यम से केवल धनागम हो, ऐसा नहीं है, वरन इससे मनुष्य की सीखने – समझने की, जीवन की विभिन्न परिस्थितियों को नियंत्रित करने की, उसकी कार्य – क्षमता बढ़ाने की, उसके मानसिक संतुलन को ठीक रखने की दिशा में भी अत्यंत सार्थक एवं अकल्पनीय परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं| कला का अर्थ केवल मनोरंजन है, यह इसका अत्यंत संकुचित रूप है; कला का मनुष्य जीवन में इससे भी अधिक बढ़के अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान है, इसका प्रमाण विभिन्न प्रकार के शोधकार्यों के द्वारा आधुनिक समय में हमारे सम्मुख है| आवश्यकता है तो केवल उसे पहचानने की, देखने – समझने की, और उसे महत्त्व प्रदान करने की|

आधुनिक शिक्षा – तन्त्र में संगीत एवं अन्य कलाओं को एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त होता दिखाई तो दे रहा है परन्तु केवल एक सह – पाठ्यक्रम अथवा पाठ्येतर विषय के रूप में| जबकि होना तो यह चाहिए कि मनुष्य जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए जितना महत्त्व भाषा, गणित, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी इत्यादि विषयों का है, उससे किंचित् भी कम महत्त्व कलाओं का नहीं है| मनुष्य जीवन के हर पहलु में कलाओं के सम्बन्ध एवं योगदान को बिल्कुल भी नकारा नहीं जा सकता| यद्यपि धीरे – धीरे इस मानसिकता में बदलाव आना प्रारम्भ तो हुआ है परन्तु इस नवाचार के कार्यान्वयन में कई सारी ऐसी मूलभूत कठिनाईयां हैं, जिनका निवारण किए बिना समुचित परिणाम प्राप्त नहीं किया जा सकता| यह तथ्य प्रत्येक उत्तरदायी संस्थाओं एवं व्यक्तियों को ध्यान में रखना होगा| इस शोध – पत्र में ऐसी ही कुछ व्यावहारिक समस्याओं एवं उनके सम्भावित समाधान को रेखांकित करने का प्रयास शोधार्थी द्वारा किया गया है|

आधुनिक शिक्षण – तन्त्र में संगीत की उपस्थिति एवं भूमिका :

वर्तमान समय में तमाम निजी एवं सरकारी शिक्षण संस्थाओं में प्राथमिक स्तर से ही संगीत की उपस्थिति दिखाई दे तो रही है परन्तु उसको जिस प्रकार के महत्त्व, अवधान एवं कार्यान्वयन की आवश्यकता है, उसमें किसी न किसी स्तर पर कुछ न कुछ कमी अवश्य रह जा रही है जिससे उसके इच्छित परिणाम नहीं मिल पा रहे हैं| पहले बात निजी संस्थाओं में संगीत को लेकर किए जाने वाले प्रयासों की करते हैं|

http://vidyajournal.org

VIDYA - A JOURNAL OF GUJARAT UNIVERSITY

Peer-Reviewed, Multidisciplinary & Multilingual Journal

ISSN: 2321-1520 **E-ISSN:** 2583-3537

वर्तमान समय में हमारे देश में तमाम बड़े – बड़े निजी शिक्षण संस्थान सक्रिय हैं| ऐसी संस्थाओं में संगीत, नृत्य, चित्रकला और खेलकूद जैसे तमाम पाठ्येतर विषयों की ओर विशेष ध्यान दिए जाने का वादा किया जाता है और अधिकतर में ऐसा होता भी है, परन्तु विभिन्न संस्थाएं ऐसी भी होती हैं, जिनमें ऐसे विषय विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम के प्रमुख हिस्से नहीं होते, वरन इनके लिए केवल दिखावे वाला कामचलाऊ रवैया अपनाया जाता है| गीत – संगीत एवं नृत्य इत्यादि जैसे विषयों पर तभी कुछ समय दिया जाता है, जब या तो विद्यालय का वार्षिकोत्सव होता है अथवा स्वतन्त्रता या गणतन्त्र दिवस जैसे पर्व! बाकी समय इन विषयों पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया जाता| ऐसे में यह विषय विद्यार्थियों के लिए आनन्द एवं मनोरंजन वाले काम न होकर उनके लिए और अधिक कठिन हो जाते हैं, जिसको करने के लिए उनको अपने मुख्य विषयों को कुछ दिन के लिए किनारे रखना पड़ता है| फिर परीक्षा में अधिकतम अंक प्राप्त करने के उद्देश्य से छात्र केवल उन्हीं मुख्य विषयों; यथा भाषा, गणित, विज्ञान इत्यादि में ही फंसे रह जाते हैं और संगीत जैसे मनोरंजक एवं उपयोगी विषय को समझने से वंचित रह जाते हैं और उनका आगे का जीवन नीरसता से संव्याप्त हो जाता है| इसके परिणामस्वरूप वे केवल इंजीनियरिंग अथवा डॉक्टरेट इत्यादि करके अधिक से अधिक धन कमाने की ओर उन्मुख हो जाते हैं बल्कि उनके जीवन का प्रमुख उद्देश्य ही येन – केन – प्रकारेण अधिकाधिक धनोपार्जन की ओर केन्द्रित हो जाता है| संगीत जैसे विषय, जोकि उन छात्रों को जीवन जीने की कला सिखा सकते थे, जीवन के प्रति एक समग्र दृष्टिकोण अपनाने में सहायता कर सकते थे, उनके व्यक्तित्त्व का सर्वांगीण विकास करने में सहायक सिद्ध हो सकते थे, जीवन को रसपूर्ण बना सकते थे, अन्य मुख्य विषयों को और भी अधिक गहराई से समझने में मदद कर सकते थे, जीवन में मर्यादा एवं अनुशासन के महत्त्व को समझा सकते थे, उनकी मानसिक शांति में सहायक सिद्ध हो सकते थे, जीवन के प्रत्येक पहलु को धैर्यपूर्वक नियंत्रित करने की सामर्थ्य प्रदान कर सकते थे, कहीं बहुत दूर पीछे छूटता चला जाता है और जीविका कमाने, परिवार को सम्भालने और विभिन्न जिम्मेदारियों को निभाते – निभाते ही पूरा जीवन खप जाता है फिर बाद में सिवाय पछताने के और कोई चारा नहीं रह जाता है|

उपरोक्त परिच्छेद में वर्णित, मनुष्य – जीवन के प्रत्येक पहलु को प्रभावित करने का सामर्थ्य संगीत इत्यादि कलाओं में है, ऐसा हम नहीं कह रहे, बल्कि अनेकों अनुसंधान में सिद्ध हो चुका है| संगीत मनुष्य के व्यक्तित्त्व के वास्तविक सर्वांगीण विकास में सहायक होता है, यह हम और आप अच्छे से समझ सकते हैं| नीचे कुछ मुख्य बिंदु दिए जा रहे हैं, जिन पर संगीत का सकारात्मक प्रभाव स्पष्टतया पड़ता है :

१. **अनुशासन** – चूँकि संगीत एक सम्पूर्ण रूप से अनुशासन एवं उसके संविधान में बंधी हुई कला है| उसके नियमित सेवन एवं साधना से जीवन स्वयमेव ही अनुशासनबद्ध होने लगता है| विशेषकर जब पूर्व – प्राथमिक एवं प्राथमिक स्तर के बच्चों को संगीत की शिक्षा दी जाती है तो उनको अनुशासित करने के लिए दंड का सहारा लेने की सम्भावना अत्यंत क्षीण हो जाती है क्योंकि संगीत जैसे अनुशासित कला को सीखने और समझने के लिए उन्हें उन नियमों का ध्यान रखना ही पड़ता है और इसके परिणामस्वरूप उनके जीवन के प्रत्येक स्तर पर प्राकृतिक रूप से अनुशासन एवं नियन्त्रण का समावेश हो जाता है|

२. **मनोरंजन** – यह तो अनेक अनुसंधानों के द्वारा प्रमाणित हो चुका है कि छोटे बच्चों को भाषण दे के कोई चीज़ सिखाने से अधिक आसान कार्य संगीत – नृत्य के द्वारा सिखाना है क्योंकि बालमन खेलने – कूदने, मनोरंजन करने एवं आनन्द लेने की ओर प्राकृतिक रूप से ही अधिक प्रवृत्त होता है| उनके चंचल मन को केन्द्रित करने के लिए किसी भी चीज़ को मनोरंजक बना के सिखाने से खेल – खेल में ही वो विषय बच्चे आसानी से सीख लेते हैं और वो उनको लम्बे समय तक याद भी रहता है| **यथा** – एक बहुत ही प्रसिद्ध बच्चों की छोटी सी कविता है :

मछली जल की रानी है, जीवन उसका पानी है|
हाथ लगाओ डर जाएगी, बाहर निकालो मर जायेगी||

अब यदि उपरोक्त कविता पर विचार करें तो इसमें मछली जैसे जलीय जीव की मुख्य विशेषताओं को केवल दो पंक्तियों के सहारे गाते – गाते समझाने का प्रयास किया गया है| इस प्रकार के अनेकों उदाहरण मिल जायेंगे जिनमें खेल – खेल में, मनोरंजन के साथ – साथ गहरी से गहरी बात को समझाने का सफल प्रयत्न किया गया है| अब उपरोक्त कविता के उदाहरण में देखें तो क्या मछली संगीत – कला का हिस्सा है? नहीं! वो सामान्य ज्ञान – विज्ञान का हिस्सा अवश्य है परन्तु संगीत के माध्यम से उस बात को समझाने पर वही ज्ञान की बात मनोरंजक हो जाती है और बच्चे आसानी से सीख पाते हैं|

३. **मानसिक शांति में सहायक** – यह तो वैज्ञानिक प्रयोगों के द्वारा सिद्ध किया हुआ तथ्य है कि संगीत की ध्वनि तरंगें मनुष्य के अंतर्मन को प्रभावित करने में अत्यंत प्रभावशाली सिद्ध होती हैं| चूँकि मनुष्य की उत्पत्ति के साथ ही संगीत – कला की उत्पत्ति मानी जाती है इसीलिए इसका प्रभाव किसी भी व्यक्ति पर विशेष रूप से पड़ता है| जब व्यक्ति दुखी हो तो उसमें भी संगीत, ख़ुश हो तो उसमें भी संगीत, जन्म हो तो भी संगीत, मरण हो तो भी संगीत, अध्यात्म में भी संगीत, सांसारिक कर्मों में भी संगीत, सामूहिक उत्सव में भी संगीत, अकेलेपन का सहारा भी संगीत! मनुष्य – जीवन का कौन सा ऐसा भाग है जो संगीत से विरहित है? कदाचित् कोई नहीं| जीवन के प्रत्येक भाग में किसी न किसी प्रकार के विशिष्ट संगीत का समावेश अवश्य ही है| तो विद्यालयीन शिक्षा में उसे उस प्रकार का महत्त्व क्यों नहीं जो अन्य विषयों का है? इसके कितने गम्भीर नकारात्मक परिणाम सामने आते हैं, यह हम समाज में होने वाली घटनाओं को देखकर के सहज ही अनुमान लगा सकते हैं| उद्विग्न मन को शांत करने में, जीवन में घट रही किसी अप्रिय घटना के नकारात्मक प्रभाव को क्षीण करने में जितना सहायक संगीत हो सकता है, उतना कोई अन्य विषय नहीं| परन्तु हमारा समाज तो केवल धन कमाने के उद्देश्य से शिक्षा प्रदान करने पर तुला हुआ है, जोकि शिक्षा एवं विद्या के कई उद्देश्यों में से एक प्रमुख उद्देश्य अवश्य है परन्तु परम् अथवा अंतिम उद्देश्य तो बिल्कुल नहीं!

४. **मनुष्य के सर्वांगीण विकास में सहायक** – यथार्थ शिक्षा अथवा विद्या वह है जोकि मनुष्य का सर्वांगीण विकास करे| सर्वांगीण शब्द का अर्थ ही है जीवन के प्रत्येक भाग में काम आने वाली विद्या| व्यावसायिक शिक्षा का उद्देश्य धनार्जन से सिद्ध हो जाता है परन्तु जीवन के अन्य पहलुओं का क्या? क्या उनका मनुष्य के लिए कोई महत्त्व नहीं है? कोई उपयोगिता नहीं है? धन कमाने के अतिरिक्त जीवन का और कोई उद्देश्य नहीं है? इन सब ज्वलंत प्रश्नों पर यदि हम विचार करें तो पता चलता है कि आज के शिक्षण – तन्त्र की सबसे बड़ी कमी क्या है|

उपरिवर्णित विभिन्न चुनौतियों एवं समस्याओं के सम्भावित समाधान :

जैसा कि इस शोध – पत्र का मुख्य उद्देश्य ही है पूर्व प्राथमिक से लेकर उत्तर माध्यमिक स्तर तक के शिक्षण – तन्त्र में संगीत इत्यादि कलाओं के महत्त्व को रेखांकित करना और उन्हें अन्य विषयों के समकक्ष मान्यता प्रदान करना| इसके लिए उपरोक्त परिच्छेदों में शोधार्थी ने जिन प्रमुख तथ्यों की चर्चा की, उनके सम्भावित समाधान की खोज करना इस शोध – पत्र का मुख्य ध्येय है|

http://vidyajournal.org

VIDYA - A JOURNAL OF GUJARAT UNIVERSITY

Peer-Reviewed, Multidisciplinary & Multilingual Journal

ISSN: 2321-1520 **E-ISSN:** 2583-3537

पहली बात तो यह है कि सरकारी से लेकर ग़ैर – सरकारी, निजी, स्वायत्त, अर्द्ध – सरकारी इत्यादि प्रत्येक प्रकार की शिक्षण संस्थाओं के पूर्व प्राथमिक से लेकर उत्तर माध्यमिक स्तर तक के पाठ्यक्रम में संगीत को सम्मिलित करना अत्यावश्यक है| इसके लिए पाठ्यक्रम बनाने वाली नामिका में संगीत एवं अन्य कलाओं के विषय – विशेषज्ञों का होना आवश्यक है क्योंकि जब भाषा, विज्ञान एवं गणित जैसे विषयों के विशेषज्ञ अपने – अपने विषय के बारे में विचार कर रहे हैं तब इन कलाओं के विशेषज्ञ भी पाठ्यक्रम के किस स्तर पर कैसी शिक्षण – प्रणाली होनी चाहिए, इस पर विचार करेंगे तथा उनके कार्यान्वयन सम्बन्धी समस्याओं के समाधान की ओर कार्य करेंगे| दूसरी बात, इस शोध – पत्र के लेखक शोधार्थी ने इस ज्वलंत विषय पर लेखन प्रारम्भ करने से पूर्व की अनुसंधान – प्रक्रिया में पूर्व प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर काम करने वाले संगीत एवं अन्य कलाओं के शिक्षकगण से परिचर्चा की, जिनमें अहमदाबाद की सुश्री शैली परिख का भी नाम है| सुश्री शैली परिख अहमदाबाद के विभिन्न निजी संस्थाओं, सरकारी तथा ग़ैर सरकारी संगठनों के द्वारा संचालित शिक्षा शालाओं में विगत कई वर्षों से संगीत एवं कला शिक्षक के रूप में सक्रिय हैं| उनसे हुई परिचर्चा में गुजरात राज्य के सरकारी शिक्षण तन्त्र का आलोचनात्मक विश्लेषण हुआ, जिसमें यह पता चला कि ऐसे कौन – कौन से बिंदु हैं, जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता है| इस परिचर्चा में ऐसा नहीं हुआ कि केवल कमियां ही दिखाई दीं, वरन कई सारे ऐसे महत्त्वपूर्ण तथ्य भी उजागर हुए, जिनके बारे में सुनकर अच्छा लगा कि विभिन्न संस्थाएं एवं तन्त्र आजकल की विद्यालयीन शिक्षा में संगीत जैसे विषयों की आवश्यकता एवं महत्त्व को समझने लगे हैं और इस दिशा में सार्थक प्रगति करने के उद्देश्य से विभिन्न प्रयास भी किए जा रहे हैं; **जैसे** – सुश्री शैली परिख ने गुजरात राज्य के अहमदाबाद शहर के नगरीय विद्यालयों से सम्बन्धित कुछ तथ्य बताये जिनका इस शोध – पत्र में उल्लेख करना आवश्यक है :

१. **नई शिक्षा नीति** – २०२० के अनुसार बारहवीं तक की विद्यालयीन शिक्षा को ग्रेड एवं बच्चों की उम्र के हिसाब से कुल चार वर्गों में बांटा गया है| प्रथम वर्ग में ३ से ७ वर्ष तक के बच्चों के लिए गुजरात सरकार द्वारा अहमदाबाद शहर के नगरीय विद्यालयों में 'बाल वाटिका' की स्थापना की गयी है जिसमें नर्सरी से लेकर दूसरी कक्षा तक की शिक्षा प्रदान की जाती है| द्वितीय वर्ग में ८ से १० वर्ष तक की उम्र के बच्चों के लिए प्राथमिक शालाओं की व्यवस्था की गयी है जिसमें बच्चों को कक्षा ३ से ५ तक की शिक्षा प्रदान की जाती है| तृतीय वर्ग में ११ से १३ वर्ष की आयु के बच्चों को कौशल आधारित शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से माध्यमिक शालाओं की स्थापना की गयी है जिसमें उनको कक्षा ६ से ८ की शिक्षा प्रदान की जाती है| चौथे एवं अंतिम वर्ग में १४ से १७ वर्ष की आयु के बच्चों के लिए उच्च माध्यमिक शालाओं की स्थापना की गयी है जिसमें उनको कक्षा ९ से १२ तक की शिक्षा प्रदान की जाती है| यह तो हुई विद्यालयीन शिक्षा के लिए गुजरात सरकार द्वारा बनाई गयी व्यवस्था की बात, अब अगले बिंदु में इस तन्त्र में संगीत शिक्षा के स्वरूप के बारे में चर्चा करेंगे|

२. प्रथम वर्ग, जिसे **'बाल वाटिका'** कहा जाता है, इसमें बालकों को शिक्षा प्रदान करने के लिए पुस्तक की अवधारणा नहीं है, उसके स्थान पर विभिन्न तालिकाओं की व्यवस्था की गयी है, जिसे उनके कक्षा की दीवारों पर लगा दिया जाता है और शिक्षकगण क्षेत्रीय भाषा के गीतों, अभिनय गीतों एवं कविताओं इत्यादि के सहारे पाठ्यक्रम समझाते हैं| इस वर्ग के विद्यार्थियों की आयु कम होती है इस कारण पुस्तक का न होना उनकी शिक्षण प्रक्रिया को आसान बनाने की दिशा में उठाया गया एक अच्छा क़दम माना जा सकता है, परन्तु कमी यह है कि इस स्तर के विद्यार्थियों के लिए गणित, सामान्य विज्ञान एवं भाषा के शिक्षक तो उपलब्ध हैं, किन्तु संगीत के शिक्षकों की उपलब्धता नहीं है| ऐसे में अन्य विषयों के शिक्षक ही संगीत की शिक्षा भी प्रदान करते हैं| चूँकि उन शिक्षकों के लिए संगीत तो मुख्य विषय होता नहीं है, इसलिए मुख्य विषयों पर ही सारा ध्यान केन्द्रित किया जाता है तथा राष्ट्रीय पर्वों एवं अन्य उत्सवों के अवसर पर बच्चों को स्मार्टक्लास की डिजिटल स्क्रीन पर यूट्यूब के ऑनलाइन वीडियोज दिखाकर कुछ गीत इत्यादि याद करा दिए जाते हैं! ऐसी हालत में सबसे अधिक नुकसान बच्चों का ही होता है क्योंकि संगीत विषय के विशेषज्ञ की उपस्थिति एवं उनके मार्गदर्शन में बच्चों को संगीत इत्यादि कलाओं के महत्त्व के बारे में जो जानकारी मिलती, उनके जीवन में अनुशासन का जो प्रवेश होता, संगीत के माध्यम से जो शिष्टता, समानुभूति, जीवन की गतिशीलता में अन्तर्निहित लय एवं सचेतन इत्यादि का जो लाभ उन बच्चों को मिल सकता था, उससे उन्हें वंचित होना पड़ जाता है| और तो और, यूट्यूब से सुनकर सीखने से उनकी अपनी परिकल्पना को विकसित होने का अवसर भी नहीं मिलता और भविष्य में भी किसी भी प्रश्न का उत्तर जानने के लिए या कुछ भी सीखने के लिए बच्चे ऐसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स के अधीन हो जाते हैं क्योंकि उनकी स्वतंत्र विचारणा की शक्ति कम हो जाती है| इस समस्या के निवारण के लिए पूर्व प्राथमिक स्तर से ही अन्य विषयों की भांति संगीत इत्यादि कलाओं के विशेषज्ञ शिक्षकों की नियुक्ति भी होनी चाहिए जिससे इस स्तर के बच्चों के अंदर इन कलाओं के संस्कार का बीजारोपण हो सके जो उनके आने वाले भविष्य में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है| इस वर्ग के अतिरिक्त द्वितीय वर्ग, जिसे **प्राथमिक शाला** कहा जाता है, इसमें कुछ पुस्तकें; **जैसे** – गुजराती, हिंदी एवं संस्कृत तो हैं, तथा इनमें विभिन्न महान कवियों, **जैसे** – कबीरदास, सूरदास, मीराबाई इत्यादि के पद, गरबा, भजन, लोकगीत, देशभक्ति गीत, दोहा, छंद एवं प्रार्थना इत्यादि भी दिए गये हैं परंतु संगीत के शिक्षकों की अनुपलब्धता के कारण जो परिणाम की अपेक्षा रहती है, वह नहीं मिल पाता है|

३. तृतीय वर्ग, जिसे **माध्यमिक शाला** कहा जाता है, इसमें **'सर्वांगी शिक्षण'** नाम से पुस्तक उपलब्ध है, जिसमें योग, दृश्यकला एवं खेलकूद इत्यादि विषयों के साथ – साथ शास्त्रीय संगीत का भी उल्लेख किया गया है| इसमें संगीत में प्रयुक्त होने वाली प्रमुख आधारभूत शब्दावलियों; **यथा** – राग, थाट, आरोह – अवरोह, वादी – सम्वादी इत्यादि, विभिन्न रागों; **यथा** – भूपाली, भीमपलास, दुर्गा, वृन्दावनी सारंग इत्यादि के साथ - साथ विभिन्न तालों; **यथा** – तीनताल, एकताल, कहरवा, दादरा इत्यादि का समावेश किया गया है| इसके अतिरिक्त भजन एवं सुगम संगीत के आधारभूत तत्वों को भी सम्मिलित किया गया है| इस तीसरे वर्ग से संगीत के शिक्षकों की नियुक्ति का प्रावधान सरकार द्वारा किया गया है, परन्तु काफी समय से नवीन नियुक्तियां नहीं होने के कारण यह स्थान रिक्त ही है| इस वर्ग के अतिरिक्त चौथे एवं अंतिम वर्ग में भी कमोबेश ऐसी ही स्थिति है|

४. उपरोक्त तीनों बिन्दुओं में वर्णित तथ्यों का अवलोकन करने के पश्चात् यह निष्कर्ष तो निकलता है कि संगीत जैसे गूढ़ विषय को समझने, उसे पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने और इस क्षेत्र में सार्थक प्रगति करने के उद्देश्य से जो प्रयास सरकारी स्तर पर किए जा रहे हैं, वह निश्चित ही सराहनीय हैं परन्तु उनके कार्यान्वयन में आड़े आने वाली जो मूलभूत कठिनाईयां हैं, उनका निवारण किए बिना निश्चित रूप से समुचित परिणाम प्राप्त करना असम्भव ही है| यहाँ पर सरकारी शिक्षण – तन्त्र की चर्चा इसलिए आवश्यक है, और इस चर्चा का केंद्रबिंदु भी सरकारी तन्त्र इसलिए ही है क्योंकि हमारे देश की अल्प सुविधाप्राप्त जनता के लिए उच्चकोटि के निजी शिक्षण संस्थाओं में अपने बच्चों को भेज पाना असम्भव सा होता है| वैसे तो अधिकतर निजी एवं ग़ैर सरकारी संस्थाओं के द्वारा संचालित विद्यालयों में पूर्व प्राथमिक स्तर से ही संगीत एवं अन्य कलाओं तथा खेलकूद इत्यादि प्रत्येक विषय की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है और इन विषयों के विशेषज्ञों की नियुक्ति भी होती है, परन्तु इसमें मुख्य कठिनाई यह है कि यह हमारे देश की अधिकतर अति सामान्य एवं अल्प सुविधा सम्पन्न जनता के लिए अभिगम्य नहीं है, उनके लिए तो सरकारी तन्त्र ही एकमात्र आधार है|

उपरोक्त बिन्दुओं में उदाहरण के तौर पर गुजरात के सरकारी शिक्षण तन्त्र एवं अहमदाबाद शहर के नगरीय विद्यालयों का उल्लेख किया गया है, परन्तु हमारे देश के अधिकतर अथवा यूँ कहें कि लगभग सभी राज्यों के सरकारी शिक्षण तन्त्र की लगभग यही स्थिति है| मैं स्वयं उत्तर प्रदेश से हूँ, वहां के भी सरकारी शिक्षण संस्थाओं में कमोबेश यही स्थिति है| कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि भारतीय शिक्षण तन्त्र में माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा में संगीत जैसे विषयों का स्थान नगण्य जैसा है| इसके ऊपर के उच्च शिक्षण – तन्त्र में तो फिर भी कुछ व्यवस्था उपलब्ध है, परन्तु विद्यालयीन शिक्षा का जो भाग सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है, तथा जिसमें देश के भावी पीढ़ी के आधार का निर्माण होता है, उसी में संगीत एवं अन्य कलाओं की ऐसी उपेक्षा अत्यंत कष्टकारी प्रतीत होती है| जब आधार का ही निर्माण नहीं होगा तो आगे चलकर भवन कैसे बनायेंगे? यही कारण है कि

http://vidyajournal.org

VIDYA - A JOURNAL OF GUJARAT UNIVERSITY

Peer-Reviewed, Multidisciplinary & Multilingual Journal

ISSN: 2321-1520 **E-ISSN:** 2583-3537

आज की पीढ़ी धीरे – धीरे भावनाशून्य, अवसादग्रस्त, नैतिक मूल्यों से रहित, नियम एवं अनुशासन का पालन न करने वाली, स्वकेन्द्रित एवं संस्काररहित होती जा रही है| क्योंकि जैसा कि हमने पूर्व में ही कहा कि संगीत केवल मनोरंजन की वस्तु नहीं है, वरन यह तो मानव के सर्वांगीण विकास का एक उत्कृष्ट माध्यम है| संगीत को जबतक केवल नाच – गाना तक सीमित करके रखा जायेगा तथा मनोरंजन करने वाले साधन के रूप में देखा जायेगा, तबतक मनुष्य जीवन में आने वाली विभिन्न चुनौतियों का समेकित समाधान नहीं हो सकेगा| संगीत न केवल मनुष्य को एकाग्रचित्त एवं शांतचित्त बनाता है, वरन उसे अनुशासन में भी ढालता है| संगीत की साधना करने वाले बच्चों का मस्तिष्क अन्यों की तुलना में अधिक तीव्र गति से विकसित होता है| संगीत हमारे अंतःकरण को निर्मल बनाता है, चित्त को शुद्ध बनाता है, साथ ही संगीत से जुड़ने के पश्चात् हम अपने देश, समाज और सांस्कृतिक परम्परा के और अधिक निकट आते जाते हैं| संगीत के द्वारा हमारे मन – मस्तिष्क में आधात्मिकता का संचार होता है जिसकी वजह से जीवन में नैतिक मूल्यों का समावेश होता है| संगीत के द्वारा हमें हमारी सांस्कृतिक मूल्यों, उसके महत्त्व, उसकी महान परम्पराओं की जानकारी मिलती है और ऐसा कहा गया है कि जिस राष्ट्र के पास सांस्कृतिक जीवंतता एवं निरंतरता नहीं है, वह समाज मृतप्राय है| **'भर्तृहरीविरचित नीतिशतकम्'** में तो यहाँ तक कहा गया है कि –

साहित्य – संगीत कलाविहीनः, साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः|
तृणं न खादन्नपि जीवमानः, तद्भागधेयं परमं पशूनाम्||

अर्थात् जो समाज साहित्य, संगीत एवं कलाओं से विहीन अर्थात् रहित है, वह समाज बिना नाख़ून एवं सींग के पशु के समान है और यह उन पशुओं का भाग्य है कि वह बाकियों की तरह घास नहीं खा सकते| जिस प्रकार पशुओं का प्राकृतिक शृंगार एवं उनके स्वरूप की पूर्णता उनकी पूंछ और उनके नाखूनों से होती है उसी प्रकार से किसी भी जीवंत समाज की पहचान एवं उसे पूर्णता की प्राप्ति उस समाज में विकसित होने एवं स्थान पाने वाली साहित्य एवं संगीत इत्यादि विभिन्न कलाओं से होती है|

निष्कर्ष

अंततः इस शोध – पत्र के माध्यम से शोधार्थी द्वारा प्रत्येक उत्तरदायी संस्थान एवं व्यक्ति का ध्यान इस ओर आकर्षित करने का प्रयास किया जा रहा है कि हमारे देश की विद्यालयीन शिक्षा में पूर्व प्राथमिक स्तर से लेकर विश्वविद्यालयीन स्तर तक के शिक्षण – तन्त्र में संगीत की जो उपस्थिति है, उसकी सार्थकता अवश्य ही सिद्ध होनी चाहिए| उपरिलिखित परिच्छेदों में शोधार्थी ने शिक्षकों की अनुपलब्धता के बारे में जो बात की है, उसका निवारण करने से दो महत्त्वपूर्ण कार्य पूरे होंगे; पहला, कि जो शिक्षकों के न होने से समुचित परिणाम मिलने अथवा पाठ्यक्रम में सम्मिलित संगीत के तत्वों को बच्चों के ठीक से न समझ पाने वाली बात है, वो समस्या सुलझ जाएगी और दूसरे, कि इससे नवीन रोजगार का सृजन भी होगा| क्योंकि हमारे देश में विभिन्न संस्थाओं से प्रति वर्ष हज़ारों की संख्या में संगीत में डिग्री आदि लेकर के जो व्यक्ति – समूह निकलता है, उनको सबसे बड़ी समस्या रोजगार सम्बन्धी होती है| तो इस दिशा में कार्य करने से इन दोनों ही प्रमुख समस्याओं का समावेशित समाधान हो जायेगा| इसके लिए सरकारों के साथ – साथ समस्त शैक्षिक संस्थाओं, शिक्षाविदों, कलाविदों एवं विद्वज्जनों को स्वयं आगे बढ़कर यह उत्तरदायित्व स्वीकार करना होगा और हमारे देश के शैक्षिक – समाज को दिशा दिखानी होगी, तभी जाकर के हम अपने राष्ट्र के एक समग्र एवं सर्वांगीण विकसित स्वरूप की कल्पना को साकार कर सकते हैं|

सन्दर्भ सूची

1. प्रत्यक्ष सम्वाद, सुश्री शैली परिख.
2. ऑनलाइन सम्वाद, डॉ० देवेन्द्र वर्मा "ब्रजरंग".
3. प्रत्यक्ष सम्वाद, डॉ० विराज अमर भट्ट.
4. प्रत्यक्ष सम्वाद, डॉ० श्वेतकेतु ए० वोरा.
5. संगीत मासिक, संगीत कार्यालय हाथरस.
6. संगीत कला विहार मासिक, अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडल, मुंबई.

http://vidyajournal.org